17

कलीसिया की एकता

टी.बी. लैरीमोर, एक सुसमाचार प्रचारक था, जिसके मसीह समान आत्मा को वे सब पहचानते थे जो उसे जानते थे, उसने मसीह की कलीसिया के परिवार की एकता की व्याज़्या भजन संहिता 133:1 के साथ की: ''देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!'' कुछ चीज़ें अच्छी होती हैं पर सुखद नहीं होती। कैन्सर को निकालने के लिए किया गया ऑपरेशन प्राणरक्षक है, इसलिए अच्छा है, परन्तु यह रोगी के लिए सुखद नहीं है। कुछ चीज़ें सुखद हैं परन्तु अच्छी नहीं हैं। जुआ खेलना सुखद है और विशेष अवसरों पर सुखद लगता है। परन्तु जुआ खेलने की आदत बुरी है। भाई लैरीमोर ने ध्यान दिया कि इस संसार में कुछ चीज़ें हैं जो अच्छी और सुखद होती हैं वास्तव में हमारे लिए लाभदायक होती हैं और साथ ही उनका अनुभव भी सुखद होता है। उसने स्पष्ट किया कि ये दोनों गुण मसीह में एक होने से मिलते हैं, जब विश्वासी लोग मिलकर सहमति[1] से रहते हैं। उसकी इस बात से कौन असहमत होगा?

नये नियम के अनुसार, मसीह से एकता न केवल हमारे लिए अच्छी और सुखद है; बल्कि इससे भी अधिक महत्वपूर्ण, यह अच्छी और परमेश्वर को पसन्द है। संसार की सबसे काली रात, जिसमें यीशु ने लोगों के हाथों पकड़वाए जाने से कुछ देर पहले, उनकी एकता के लिए प्रार्थना की जिन्होंने भविष्य में उस पर विश्वास करना था। उसने अपने पिता से प्रार्थना की, ''मैं केवल इन्हीं के लिए बिनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में है और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिए कि जगत प्रतीति करे कि तू ही ने मुझे भेजा'' (यूहन्ना 17:20, 21)।

यदि आपकी हत्या कल की जाने वाली हो, और आप आज प्रार्थना में झुके हों

तो, आप क्या प्रार्थना करेंगे? क्या आप तुच्छ, महत्वहीन योजनाओं के लिए प्रार्थना करेंगे? क्या आप उन आशाओं के लिए प्रार्थना नहीं करोगे, जो संसार में सबसे प्रिय और महत्वपूर्ण हों? क्या हमें दिखता नहीं कि मसीह की नज़र में एकता का क्या मूल्य होगा जब हम उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक रात पहले एकता के लिए उसकी प्रार्थना को पढ़ते हैं? यीशु के दिल में सबसे प्रिय और अति महत्वपूर्ण बात विश्वासियों की एकता की चाह ही थी, नहीं तो वह अपनी मौत की पूर्व रात्रि यह प्रार्थना न करता।

जब पौलुस ने कुरिन्थुस की बुरी तरह से विभाजित कलीसिया को लिखा, जो अनेक समस्याओं और कमज़ोरियों में घिरी हुई थी, तो पहले उसने एकता की एक ज़ोरदार पुकार की: ''हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात करो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो'' (1 कुरिन्थियों 1:10)। जिस समय, 54 ईस्वी या 56 ईस्वी में, पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखा, उस समय किसी सञ्प्रदाय (डिनोमिनेशन) का अस्तित्व नहीं था, एक ही कलीसिया जो उस समय थी वह प्रभु की कलीसिया थी, और पौलुस ने, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, कुरिन्थुस में परमेश्वर की कलीसिया को एकता में रखने के लिए कहा। उसने केवल एकता के लिए बिनती ही नहीं की, बल्कि उसने यह बिनती यीशु मसीह के नाम में की।

आइए कलीसिया की एकता को अधिक विस्तार से देखें। दो हवालों का उल्लेख पहले ही यह स्पष्ट करता है कि मसीह की कलीसिया में मधुर एकता होनी चाहिए, परन्तु वह एकता किस प्रकार की हो? वह एकता कैसी है? जिस एकता के लिए मसीह ने प्रार्थना की उसको समझकर हमें कलीसिया के बारे में जानने में सहायता मिलेगी।

एक देह का अंग होने में एकता

पहले, आइए, मसीह की देह में परमेश्वर के द्वारा दी हुई लोगों की एकता को समझने का यत्न करें। नया नियम उस एकता की बात करता है जो स्वाभाविक है और मसीह में होने का आधार है। यह एकता परमेश्वर की कृपा से होती है अर्थात मसीह की देह में प्रवेश करने पर जो भी मसीह की देह का सदस्य है, उसने इस एकता को पा लिया है।

नये नियम का संसार दो समाजों में बंटा हुआ था: यहूदी और गैर यहूदी। इन दो गुटों के बीच बंटवारा इतना बड़ा था जितना कि आज दो जातियों के बीच में हो सकता है। परन्तु पौलुस ने पुष्टि की कि यहूदी और गैर यहूदी मसीह में *एक* हो चुके थे:

> क्योंकि वही हमारा मेल है, जिसने दोनों को एक कर लिया ... (इफिसियों 2:14)।
>
> और अपने शरीर में ... दोनों से एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस...के द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए (इफिसियों 2:15, 16)।
>
> अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो (गलतियों 3:28)।

मसीह ने, क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा उन सबको जो मसीह में आते हैं एक कर दिया, चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि या जाति से हों। यहूदी और गैर यहूदी, दो अलग-अलग जातियों को, एक नई जाति बना दिया गया और उन्हें मसीही कहा जाने लगा। उसने गैर यहूदियों को उठाकर यहूदियों के स्थान पर कब्ज़ा नहीं करवाया; न ही उसने यहूदियों को गैर यहूदियों के स्थान पर लाकर नीचा किया। उसने यहूदियों और गैर यहूदियों, दोनों को मसीह में स्वर्गीय स्थिति में उठाया (जो कि अन्य किसी अवसर या स्थिति जिसका किसी ने वायदा किया या उसे पाया हो, से बढ़कर थी)। यहूदी को यह ज़ूलना था कि वह यहूदी था, और गैर यहूदी को यह भूलना था कि वह यहूदी नहीं है।

यही बात आज कलीसिया में लागू होती है। हर एक व्यक्ति को यह सोचना है कि वह मसीह में क्या है। मसीह सभी मसीहियों के लिए मुक्तिदाता और प्रभु है। इस आत्मिक एकता में, सभी राष्ट्रीय, जातीय, सामाजिक और पारिवारिक मतभेदों को समाप्त कर दिया गया है।

मसीह के द्वारा, लोग परमश्वेर के साथ मिलते हैं या लाए जाते हैं (कुलुस्सियों 1:20)। फिर, उस मेल के द्वारा, मसीहियों को एक दूसरे के साथ मिलने के लिए लाया जाता है और वे ''आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते'' हैं (इफिसियों 2:22)। इससे पहले कि दोनों आपस में मिलें, उनके लिए परमेश्वर के साथ एक होना आवश्यक है।

इतिहास में नौमैंन्स और सैक्सन्ज़ जैसे लोगों के उदाहरण मिलते हैं, जो एक दूसरे

से युद्ध ही करते रहते थे। शत्रुता और घृणा उनके स्वभाव में ही घुल मिलकर उनकी विशेषता बन गई थी। परन्तु, अन्ततः सदियों से लोग एक दूसरे से मिलने लगे और शादी ब्याह करने लगे जब तक वे मिलकर एक नहीं हो गए। इस प्रकार पृथक पहचान वाली कौमों के समाज, में हो रहे युद्ध समाप्त हो गए। निस्संदेह, युद्ध समाप्त हो गए क्योंकि उनमें फूट नहीं रही। दो समाजों के एक दूसरे में मिलने से ऐसे लोगों का एक नया समाज बन गया जो एक दूसरे से प्रेम और आदर करते थे।[2]

इस प्रकार सभी इन्सानी मतभेद और रुकावटें दूर करके; परमेश्वर की अद्‌भुत कृपा से लोगों की एक नई देह बन जाती है। उसकी देह में लोग यहूदी या यूनानी, दास या स्वतन्त्र, धनी या निर्धन, नर या नारी, गोरे या काले का विचार नहीं करते। मसीही लोग केवल इस पर ध्यान देते हैं कि वे ''सब मसीह यीशु में एक'' हैं (गलतियों 3:28ख)।

फिर तो, कलीसिया की एकता को समझने के लिए पहले हमें उस एकता का ज्ञान होना चाहिए जो मसीहियों को उसकी देह में प्रवेश करते समय दी जाती है। देह में प्रवेश करते समय नये मसीहियों को यह बताना उपयुक्त ही नहीं, बल्कि आवश्यक है, कि वे उसकी देह के अन्य सभी सदस्यों के साथ एक हैं। कलीसिया के लिए इस सच्चाई पर विचार करना और इससे सहमत होना आवश्यक है, मसीह की देह में न कोई पद, न रुकावट, न फूट, और न कबीलों का महत्व है। सभी सदस्य मसीह और एक दूसरे के साथ एक हो गए हैं।

शिक्षा में एकता

दूसरा, मसीह की शिक्षा में एकता पाई जाती है। जब लोग मसीह की देह में प्रवेश करते हैं तो आत्मा की ओर से एकता मिलती है, परन्तु यह एकता हर एक सदस्य के द्वारा पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं की आज्ञा मान कर कायम रखी जाती है।

मसीही लोग शिक्षा और विश्वास की एकता के द्वारा आपस में जुड़े हुए हैं। मसीह की देह उन लोगों का समूह नहीं है जो परमेश्वर और जीवन के अनुमानों के बारे में अप्रमाणित विश्वासों के द्वारा नियंत्रित किए जाते हों, उसकी देह के सदस्य परमेश्वर की सच्चाई के आत्मिक प्रकाशन के द्वारा संगठित होते हैं।

पौलुस ने मसीह की कलीसिया की एकता की बात करके मसीहियों से बिनती की कि वे मेल के बन्ध में आत्मा की एकता को बनाएं। उसने सात ''इक्कों'' की बात की

जो मसीह की देह में एकता बनाने की शिक्षा का आधार हैं। उसने कहा, ''एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे, अपने बुलाए जाने की एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सबका एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है'' (इफिसियों 4:4-6)। जिस देह के बारे में पौलुस ने लिखा, वह मसीह की आत्मिक देह अर्थात कलीसिया है (इफिसियों 1:22, 23)। आत्मा परमेश्वरत्व का तीसरा सदस्य है जिसने पवित्र शास्त्र में प्रकाशन दिया। एक ही आशा अर्थात अनन्त आशा है जो सुसमाचार के द्वारा प्रत्येक मसीही के हृदय में डाली जाती है (कुलुस्सियों 1:23)। एक ही प्रभु अर्थात मसीह है, जो जीवित परमेश्वर का पुत्र है, जो हमारे पापों के लिए मरा और हमें धर्मी बनाने के लिए जी उठा। एक ही विश्वास है जो मसीह और उसके वचन में है और जो पवित्र शास्त्र की गवाही से आता है (रोमियों 10:17)। एक ही बपतिस्मा है, जिसकी आज्ञा मसीह ने दी और जो मसीही युग के अन्त तक लागू रहेगा (मत्ती 28:19, 20)। एक ही परमेश्वर अर्थात अनन्त परमेश्वर है, जिसने पृथ्वी को रचा और उसे स्थिर रखता है, केवल वही अकेला सच्चा और जीवित परमेश्वर है। सात ''इक्कों'' के बारे में आर.सी. बैल्ल ने कहा है, ''ये अटल, अन्तिम तथ्य अपनी स्वीकृति या खण्डन, दोनों में से एक की मांग करते हैं।'' कोई और प्रतिक्रिया सम्भव नहीं है; जो आदमी इनमें से एक को भी रद्द करता है, वह किसी भी प्रकार से मसीही नहीं है।''[3]

संघ एक चीज़ है, परन्तु एकता दूसरी। संघ बल से बनाया जा सकता है, परन्तु एकता केवल समर्पण में ही पाई जा सकती है। संघ दो लोगों को रस्सियों से इकट्ठा करने का प्रयत्न करके हो सकती है, परन्तु एकता तो विश्वास और प्रेम के साथ दिलों के इकट्ठा बांधने से ही हो सकती है। मनों और इच्छाओं में मतभेद वाले लोग एक प्रकार के संघ का तो अनुभव कर सकते हैं, परन्तु एकमत केवल एक समान सच्चाइयां बोलने और एक मन और विचार के होने से ही रह सकते हैं।

पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 1:10 में केवल एकता के लिए बिनती ही नहीं की, बल्कि उसने सही-सही बता दिया कि वह किस प्रकार की एकता के लिए बिनती कर रहा था अर्थात मतभेदों के बिना, मन और विचार में सम्पूर्ण, सहमति की एकता। इस प्रकार की एकता मसीह की इच्छा के आगे झुक कर ही लाई जा सकती है। प्रेरितों के काम 2 में, जिस दिन कलीसिया की स्थापना हुई, हर एक व्यक्ति आत्मा की प्रेरणा से बोलने वाले पुरुषों से आत्मा के संदेश के आगे समर्पित हो गया। इस समर्पण के कारण एकता हुई।

यह एकता परमेश्वर की शिक्षाओं को मानने और विश्वास को बांटने से उत्पन्न हुई: ''और वे सब प्रेरितों से शिक्षा पाने में लौलीन रहे ... वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं'' (प्रेरितों के काम 2:42-44)। पौलुस ने फिलिप्पी में भाइयों को लिखा, ''... जहां तक हम पहुंचे हैं, उसी के अनुसार चलें'' (फिलिप्पियों 3:16)।

दैनिक जीवन में एकता

तीसरा, एकता मसीह की देह के दैनिक जीवन में देखी जाती है। मसीह में प्रवेश करते समय एकता जो पवित्र आत्मा ने दी है, वह केवल हर एक सदस्य के द्वारा बाइबल की स्पष्ट शिक्षा को मानने से ही नहीं होती, बल्कि हर एक सदस्य के मसीह में एकमत होकर व्यावहारिक और सामान्य ज्ञान से जीकर होती है।

पौलुस ने फिलिप्पी में रहने वाले भाइयों को प्रेम और मेल से रहकर जीने के लिए उत्साहित किया। उसने कहा, ''मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चिन्ता, और एक ही मनसा रखो'' (फिलिप्पियों 2:2)। उसने आगे कहा, ''मैं यूओदिया को भी समझाता हूं, और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें'' (फिलिप्पियों 4:2)। ये आयतें अवश्य ही चाहती हैं कि मसीह की देह का हर एक अंग बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार जिये। एकता को बनाए रखने के लिए, मसीहियों को चाहिए कि कभी-कभी वे अपने विचार और इच्छाओं को अपने तक ही सीमित रखें।

कलीसिया कभी नहीं चाहेगी कि कोई भाई अपने विवेक के विरुद्ध जाए। पौलुस ने कहा,

> सो आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगाएं पर तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के साम्हने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे (रोमियों 14:13)।
>
> निदान हम बलवानों को चाहिए, कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें; न कि अपने आप को प्रसन्न करें। हम में से हर एक अपने पड़ोसी को उस की भलाई के लिए सुधारने के निमित्त प्रसन्न करे क्योंकि मसीह ने अपने आपको प्रसन्न नहीं किया, पर जैसा लिखा है कि ''तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ

पड़ी'' (रोमियों 15:1-3)।

व्यावहारिक एकता के लिए पारस्परिक वार्तालाप आवश्यक है। स्वार्थी मनुष्य कभी दूसरों के साथ एकता को नहीं जान पाएगा। वह हमेशा एक छोटे से राज्य में रहेगा जिसकी सीमाएं उसकी अपनी मांगों की चारदीवारी है। वह सच्ची संगति करने के लिए उस चारदीवारी से बाहर नहीं निकल सकता और न ही उसके साथ सच्ची संगति के लिए कोई और उस चारदीवारी में घुस सकता है।

मसीह में यह व्यावहारिक एकता तब बढ़ती है जब मसीह की देह का हर एक अंग प्रेम और कृपा से अपने भाई तथा बहन के बारे में बड़ी सावधानी रखता और सोचता है। मसीही की अपनी मांगें और इच्छाएं कम रहनी चाहिए। उसे स्वार्थ या छल से कुछ लेना-देना नहीं है, परन्तु मन की विनम्रता से, वह औरों को अपने से उत्तम जाने (फिलिप्पियों 2:3)। उसे अपनी रुचियों का ध्यान नहीं रखना है; उसे औरों की रुचियों का ध्यान रखना है (फिलिप्पियों 2:4)। इस प्रकार जीकर, वह मसीह के मन को अच्छे ढंग से प्रस्तुत कर रहा है (फिलिप्पियों 2:5-8)।

सारांश

इसलिए, मसीह की देह की पहचान उसकी एकता से है। इस एकता में तीन बातें हैं। मसीही लोग एक देह, के रूप में, एक शिक्षा के विश्वासियों के रूप में, और लोगों के रूप में एक हैं, जो दैनिक जीवन में एक दूसरे का ध्यान रज़ते हैं। एकता परमेश्वर की कृपा से आती है जब नए मसीही उसकी कलीसिया में प्रवेश करते हैं। इसे पवित्र शास्त्र की शिक्षा के प्रति देह के पूरी तरह वचनबद्धता से कायम रखा और अनुभव किया जाता है। कलीसिया एकता का आनन्द उठाती है क्योंकि हर एक सदस्य अपने साथी मसीहियों के आत्मिक जीवन में रुचि लेता है।

परमेश्वर चाहता है कि उसके संसार में पाई जाने वाली तमाम गड़बड़ी मसीह में शान्त हो जाए; ''क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उसमें सारी परिपूर्णता वास करे। और उसके क्रूस पर बहे लहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की'' (कुलुस्सियों 1:19, 20)। मसीह, अपने सुसमाचार के द्वारा, हमें अपनी देह में इस एकता के लिए बुलाता है। परमेश्वर ने इसकी योजना बनाई (इफिसियों 3:6), मसीह

ने इसके लिए प्रार्थना की और इसकी सम्भावना दी (यूहन्ना 17:21; इफिसियों 2:16), पौलुस ने इसके लिए बिनती की (1 कुरिन्थियों 1:10), और आत्मा ने इसे बनाया है (इफिसियों 4:1-6)।

क्या हमें इस एकता को पाने और इसमें जीवन जीकर इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए?

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 243 पर)

1. मसीह में एकता किस प्रकार सुखद भी और अच्छी भी है?
2. क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक रात पहले कलीसिया के लिए मसीह की विशेष प्रार्थना क्या थी? (देखिए यूहन्ना 17:21-24)।
3. 1 कुरिन्थियों 1:10 में दी गई एकता के लिए पौलुस की विनती पर विचार कीजिए।
4. उस एकता का वर्णन करें जो देह के रूप में मसीह की कलीसिया में है।
5. कलीसिया में प्रवेश करने वाले को कलीसिया की एकता कब दी जाती है?
6. शिक्षा में कलीसिया की एकता की परिभाषा दें। देह के रूप में एकता होने और शिक्षा में एकता होने में क्या अन्तर है?
7. एकता और समर्पण से मसीह की इच्छा का क्या सम्बन्ध है?
8. शिक्षा में एकता होने और दैनिक जीवन में एकता होने में क्या अन्तर है?
9. कलीसिया में व्यावहारिक एकता रखने के लिए वे कुछ पग कौन से हैं जो मसीहियों को कभी-कभी उठाने चाहिए?

शब्द सहायता

विवेक - मनुष्य के भीतर पाई जाने वाली नैतिक गवाही को कई बार अन्दर की आवाज़ के रूप में जाना जाता है जो हमें गलत से सही को चुनने के बारे में बताती है। विवेक को परमेश्वर के वचन से शिक्षित किया जाना आवश्यक है।

यूओदिया और सुन्तुखे – दो मसीही स्त्रियां जो आपस में एक दूसरी के साथ झगड़ती थीं (फिलिप्पियों 4:2)। पौलुस ने उनसे एक दूसरे के साथ मिलकर सुलह से रहने की बिनती की।

[1]टी. बी. लैरीमोर, बायोग्राफीज़ एण्ड सर्मन्ज़, *एडि. एफ. डी. सरिगले* (पृष्ठ नहीं, तिथि नहीं; रिप्रिन्ट, नैशविले: गॉस्पल ऐडवोकेट, 1961), 35-36 में ''यूनिटी''। [2]आर. सी. बैल्ल; *स्टडीज़ इन इफिसियनज़* (ऑस्टिन, टैक्स.: फ़र्म फ़ांउडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1971), 25। [3]वहीं, 24।